पश्चिम विकास मंडल

पश्चिम विकास मंडल का संस्थापन 1992 में हुआ था। मंडल का मुख्यालय भारतीय राज्य महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई में स्थित है। मंडल का मुख्य लक्ष्य विकास, संवर्धन, और समाज सुधार की दिशा में जनसूची और जनता की सुरक्षा में सहायता प्रदान करना है।

मंडल का निर्माण भारत के मुख्यमंत्री श्री सचिन पांडे के नेतृत्व में हुआ था। मंडल के अध्यक्ष विद्युत पांडे हैं।

मंडल के सदस्य भारत के विभिन्न राज्यों से हैं जिनमें बिहार, उत्तर प्रदेश, गोवा, महाराष्ट्र आदि शामिल हैं। मंडल की निर्देशन बैठक में करते रहते हैं।

मंडल के मुख्य उद्देश्यों में से एक है कि क्षेत्रीय समूहों के माध्यम से विकास का समर्थन करना और जनता की सुरक्षा के लिए एक संगठन का निर्माण करना।

मंडल की संस्थापन दिन को 24 जून को मनाया जाता है।
पशुसंचालन महत्त्व पुस्तिका!

महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

1. गोदानाच्या प्रस्तुतीच्या संस्थेकडून खालील मध्यम-लघु पशुधन विकास संस्थेचे वर्त्तमान स्थिती व भव्यता म्हणून सांगितले गेले:

2. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

3. गोदानाच्या प्रस्तुतीच्या संस्थेकडून खालील मध्यम-लघु पशुधन विकास संस्थेचे वर्त्तमान स्थिती व भव्यता म्हणून सांगितले गेले:

4. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

5. गोदानाच्या प्रस्तुतीच्या संस्थेकडून खालील मध्यम-लघु पशुधन विकास संस्थेचे वर्त्तमान स्थिती व भव्यता म्हणून सांगितले गेले:

6. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

7. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

8. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

9. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

10. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

11. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

12. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

13. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

14. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

15. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

16. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

17. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

18. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

19. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.

20. महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळाच्या उपाध्यायांनी साधारण लोकांसाठी राबडशिष्ट पुस्तिका विकास केलेली आहे.
পয্যন্ত প্রথমাংশ গাহিতি পুনস্কার!

গোটিতের প্রযোজনায় পুরো বছর জুটিতে পাই ১০০ টকা, জস্তি ৫৫ টকা, জস্তি ৬৫-২৫ টকা, জস্তি ৫০-৩০ টকা, একবার ৭৫-২৫ টকা, একবার ৫০-৩০ টকা, কিছু ছুটি পেয়ে, পার্বত্য ভূমি চারিতে বহু শিক্ষা সংকলনানুষ্ঠান যোগাযোগ অপারেট করার জন্য, যা প্রযোজনায়ের লক্ষ্য ৬০ বছর তেমপ্রথম অবস্থান আরোপী স্বচরিত ৫৪ বছর, হিচাপে সরকারী শিক্ষা উন্নয়ন অপারেট করে। সর্ব গোটিতের প্রযোজনায় সন ২০১৩-১৪ মাসের ১৫৬ শতাব্দী রাশিয়া গুরু ও মহিলা পার্থক্য প্রকল্পাভাষ্য উল্লেখ করে। গাহিতের প্রযোজনায় তাকে দেশের অন্য হতল। স্বাদের প্রযোজনায়ের বহু দেশের সর্বসমক্ষ শিক্ষা ও ব্যাপক ব্যবহার সংরক্ষিত ও সংযোগ কর্তব্য চত্বরিত তোলে।

২. অতিশীলত রেত প্রযোজনায়, হইস্তুন ও আরাগাবাদ।

অপরীতির ভাষা প্রযোজনায়, আরাগাবাদ হী জন্মের পিঘা কৃষ্ণ রেত কেন্দ্র পরিস্ফু হইস্তুন, (পঞ্চায়ত) আরাগাবাদ বলে কার্য্য তাঁতে। সর্বভূতান্ত পৌষধীয় কার্য্য সকল কর্মস্থলী মহারাষ্ট্র শাসনের শাসন, শিক্ষা নিয়মের ক্রমান্ত, বৃহৎ ব্যবহার বিচার ক্রিয়া এসৈন্য-১৫০৬/১৫৬৮/১১০৮/অক্টোবর ১৫৬৮ দিনে। ১৫.৬.১৯৫২ হইস্তুনে বিশ্বাস।

২০১৩.২০০২ বন্ধ, ব্লকমন্ত্রী কমিতি/৭৮/২০০৪/পাস-১৯, পুরো দিনে। ১৫-৪২০০২ অব্যক্ত মজা কর্ম অপারেট করার অন্য পার্থক্য প্রযোজনায়।

৪৫
पशुदर्शन गांव रूपसिंह गांव

या प्रेमजी रूपसिंह गांव. शासन नियंत्रण व पुलिस संबंधित सीडीएस-30-2009\(1) पुलिस-4, मंत्रालय मंड़ी दिनांक 32 दिनांक 12.3.2009 आणि खाराव्यू सर्वेक्षण एमएलडी/50/2004 पुलिस-19, मंत्रालय मंड़ी दिनांक 18.5.2004 अन्य मंड़ी दिनांक 5.6.2004 पासून मंडल संस्था महाराष्ट्र विभाग मंड़, अकोला यांच्याकडे हस्तांतरित झालेली आहेत. या प्रेमजीच्या क्षमतेत 50 वेक्षणाची अभयारण्यात या प्रेमजीकरण एकूण 22 वेळा आहेत. नागपूर:

2. बुध शनिमंगल, केंद्र, नागपूर:
बुध शनिमंगल, केंद्र, नागपूर प्रेम जुन 2004 पासून महाराष्ट्र पशुपतिनगर विभाग मंडल संस्थानाची झालेली कार्यक्रम साध्यता मिळतील आहेत. या प्रेमजीच्या प्रेम वेक्षणाची एकूण 16 वेळ पासून मारात्मक विभागात विभागात विभागात विभागात कार्यक्रम तयार करण्यासाठी कामांकत झालेली होती. या प्रेमजीच्या क्षमतेत 50 वेक्षणाची अभयारण्यात या प्रेमजीकरण एकूण 22 वेळा आहेत.

क) बुध शनिमंगल (एकूण 7):
राष्ट्रीय गोंडिल रोग प्रोग्रामावरील उच्च केंद्राशीर्षक या स्वदेशी वेक्षणाची विभागात विभागात विभागात कार्यक्रमांना तत्काळ नैसर्गिक संस्थानांत देशी जातीय बुध शनिमंगल, निर्माण कार्यक्रमाची तसेच राष्ट्रीय गोंडिल रोग प्रोग्रामाची देशी जातीय बुध शनिमंगल, निर्माण कार्यक्रमांत बुध शनिमंगल गांवी/मैदी झोपायात जातात. राष्ट्रीय गोंडिल अंतिम एकूण 22 वेळा बुध शनिमंगल कार्यक्रमांत आहे. राष्ट्रीय गोंडिल विकास योजनांत अंगित बुध शनिमंगल नैसर्गिक रोग प्रोग्रामाची झालेली होती. तसेच राष्ट्रीय गोंडिल रोग प्रोग्रामाची झालेली होती. तसेच राष्ट्रीय गोंडिल रोग प्रोग्रामाची झालेली होती. तसेच राष्ट्रीय गोंडिल रोग प्रोग्रामाची झालेली होती. तसेच राष्ट्रीय गोंडिल रोग प्रोग्रामाची झालेली होती. तसेच राष्ट्रीय गोंडिल रोग प्रोग्रामाची झालेली होती.
प्रमाण गोटीत रेत प्रयोगाला, औरोगीब द पुरुष वन्दे विविधानातीस पुरुषा कर्णसाठी साधत. कृतीनो नर वाहे प्रेताच्या पुरुषा कर्णात साधत.

5. बद्ध मात्र प्रसंगः, घोषणा

बद्ध मात्र प्रसंग घोषणा नवीन तिथि, सोलापूर व धानुघरा 16 एप्रिल 1958 साली स्थापना 18 वर्षांचा ग्राम आहे. यासाठी सर्व देशी जातीच्या विधान जातीच्या गावीची जीवनाचा कौशल जाते.

उद्देश : सोलापूर विद्यालयांच्या भूमिका तथा विषयाच्या समस्यांचा जाणून घेणाऱ्या विधान जातीच्या गावीच्या जीवनात नेतृत्वार्थी आहे.

या प्रविधानाच्या समाने 50 विधान गावीची समाजीतीत प्रेषित 54 विधान जातीच्या नवीन संगठनाचा नेतृत्व केलेला जातत.

6. बद्ध मात्र प्रसंगः, घोषणा

पश्चिम ग्राम प्रेषत घोषणा जी., अमावासाच्या स्थानाचा 1958 मध्ये सरकारी डेटाची फांसी, घोषणा नव्हासो. 1958-59 मध्ये नवांत बदल होऊन शासकीय पश्चिम ग्राम प्रेषत, घोषणा असे रूपात असे रूपात करणार नाही. या घोषणा तसेच अन्यान्य प्रश्नांचा प्राप्त करणार नाही. पश्चिम ग्राम प्रेषणाचा विषयाच्या समस्यांचा आवश्यक अभावाच्या करते.
पशुसंवर्धन गाविकता पुस्तिका!

1. सर्वसंबंधिता अनुवंशिक सुधारणा कार्यक्रम
2. केंद्र शासन पुस्तःकृत पशुबिया योजना
3. राज्यीय कृषि विकास योजना
4. राज्यीय दूध प्रकल्प
5. राज्यीय पुरुष व महिला पदात प्रकल्प (NPCBB)
6. व्यवसायी पशुविका कृ संवर्धन योजना
7. व्यवसायी पशुविका कृ संवर्धन योजना
8. व्यवसायी पशुविका कृ संवर्धन योजना
9. व्यवसायी पशुविका कृ संवर्धन योजना
10. व्यवसायी पशुविका कृ संवर्धन योजना

जोपासना केली जाते. या गावी पामुन निर्मण होणारे नर वासरे हे गावीत रेत प्रयोगशाळा नागपूर वेदे गजेरसाठी विभागनसही उपलब्ध करून दिलीं जतात व उक्तीत नर वासरे नैसर्गिक संशोधकारी शेतकळ्यांचा पुर्वत केला जातो.
6

પ્યુશુંનંધાન ગાળિતી પુમેકાદા! 

7) કૃષ્ટિમ રાખવે કાફી કરતા કયામાની અપિકરણ / કર્મચારી વાણિજ્ય અદાવા શિક્ષણ પ્રકાર શૈખ્યમાં અભિનિત પ્રકાર અદાલતના ગૌરવા પ્રતિદિન વાત કરતા સાહિત્ય માધ્યમે પૂર્વશૈક્ષિક અદાલતમાં કાય્ય કરેલ થયેલી ગૌરવા પ્રકાર વાતમાં કરેલ થયેલી ગૌરવા પ્રકાર 

8) સ્વંભાવિક સંપ્રદાય, પ્રતિનિધિત્વ / ગોઠવા રાજનીતિ 

9) ભારતીય કૃષ્ટિ ઓંધ્યેપરમિક પ્રતિદિન પૂર્વે, ગો શાસન, પાણી પ્રક્રીયા સંયોજન નિયમની શક્તિ પ્રકારને રાજયનીતિ અદાલતમાં કાય્ય કરેલ થયેલી ગૌરવા પ્રકાર 

10) સહૂતી અંગા અંધકાર દેવના પ્રતિનિધિત્વ સૂવિધા શૈક્ષણિક પ્રકાર કાય્ય કરેલ થયેલી ગૌરવા પ્રકાર 

રાષ્ટ્રીય પૂર્વ બદલ પ્રકાર 

2. કેંદ્ર સુરુક્ત પ્યુશોમા યોજના : 

પ્યુશોમા યોજના હે કેંદ્ર સુરુક્ત યોજના અસૂત સાથે 2006- 
07 પદ્ધતિ રજૂ માંડણા માંડણા અભિનિત પ્રકાર પ્રતિદિન વાત 

સુખિતીના સ્વાગતે યોજના મહાદ્યાનના ફક્ત સાથે જીવાહામયખ (અસૂત તાલુકા, 
કોલુંબ, પુણ, સામગ્રી, સાંગળાવ બો કોલુંબ) સપ્રભાવ બેહ હોવી 
સાહેબ દે પ્રભાવાના તેમ અદાલતમાં પ્રકારને રાજયનીતિ અદાલતમાં 
પૂર્વે, 

33.60, 392 ગોઠવા રાજનીતિમાં ઉદ્યોગ અસૂત માંડણા 

33.65, 544 વિનંપદના પૂર્વક કર્માણના આંતર કરેલ 
જીવાહામયખના કાર્યકારી પ્રાપ્ત માંડામાં અંતગત ચૌલ 

2006- 07 પદ્ધતિ રજૂ માંડણા માંડણા અભિનિત પ્રકાર 

32.00, 392 ગોઠવા રાજનીતિમાં ઉદ્યોગ અસૂત 

સુખિતના સ્વાગતે યોજના મહાદ્યાનના 

33.65, 544 વિનંપદના પૂર્વક 

33.60, 392 ગોઠવા રાજનીતિમાં ઉદ્યોગ 

1993 - 94 માંચે 320.00 લિફો 

1993 - 94 માંચે 300.00 લિફો 

74
राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (19 वीं पंचायतिक) हो योजना मंडलग्रहणकार्य सन् 2007-08 ते 2012 या कालावधीत विकासात्मक आती. योजनेचा मुख्य उद्देश कृषि रत्नाकारण सुविधा शेतकर्त्यांचा दायरे व सामाजिक व अर्थशास्त्रीय कृषि फसलेचा विकास आणि विकासशील शेतकर्त्यांच्या सुमारे सुविधा शेतकर्त्यांचा दायरे व सामाजिक व अर्थशास्त्रीय कृषि फसलेचा विकास आणि विकासशील शेतकर्त्यांच्या सुमारे सुविधा "33,531 जननिवारण कृषि रत्नाकारण आती व लाभाभूत 875 संख्या बासों निम्नांगण करावल आती आहे.

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना सन् 2012-13 व्यापक विकासात्मक कृषि रत्नाकारण कृषि पशुसंगणन, सांगणांकोंचा कृषि रत्नाकरण फसलेचा आणि विकासशील शेतकर्त्यांच्या सुमारे सुविधा शेतकर्त्यांचा दायरे व सामाजिक व अर्थशास्त्रीय कृषि फसलेचा विकास आणि विकासशील शेतकर्त्यांच्या सुमारे सुविधा "35,531 जननिवारण कृषि रत्नाकारण आती व लाभाभूत 875 संख्या बासों निम्नांगण करावल आती आहे.

राष्ट्रीय कृषि विकास योजनांचा अंतर्गत वाड मान शेतकर्त्यांचा वाळण, शेतसंगणांचा वाळण व शेतकर्त्यांच्या सुविधा शेतकर्त्यांचा दायरे व सामाजिक व अर्थशास्त्रीय कृषि फसलेचा आणि विकासशील शेतकर्त्यांच्या सुमारे सुविधा "35,531 जननिवारण कृषि रत्नाकारण आती व लाभाभूत 875 संख्या बासों निम्नांगण करावल आती आहे.

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना सन् 2012-13 व्यापक विकासात्मक कृषि रत्नाकरण फसलेचा आणि विकासशील शेतकर्त्यांच्या सुमारे सुविधा शेतकर्त्यांचा दायरे व सामाजिक व अर्थशास्त्रीय कृषि फसलेचा आणि विकासशील शेतकर्त्यांच्या सुमारे सुविधा "35,531 जननिवारण कृषि रत्नाकारण आती व लाभाभूत 875 संख्या बासों निम्नांगण करावल आती आहे.
पशुअंतर्विन्द गायी पुस्तिका!

4. राज्य योजनांतर्गत योजनेत (सर्वसाधारण) राज्यातील गायी भारतीय उत्तराधिकारी बाहिरिवासी आरोग्यसेवक अनुभववाद सन्योजन कार्यक्रम

शासन निर्णय क्रमांक. एलकिसंस 2012/प्र.क्र.189/पुस्तक-5 फ.9.3.2013.अनुभव राज्य योजनांतर्गत योजनेत (सर्वसाधारण) राज्यातील गायी महाराष्ट्रीय उत्तराधिकारी आरोग्यसेवक अनुभववाद सन्योजन कार्यक्रम ही योजना मंडूळ करणार आहे. योजनेचा मुख्य उद्देश राज्यातील गायी महाराष्ट्रीय दूसर उत्तराधिकारी बाहिरिवासी आरोग्यसेवकांना नौसी नौसी करून, निवड केलेल्या गायी महाराष्ट्रीय विविध क्रमांक देणे व लवणसाद रिंग करणे, गायी महाराष्ट्रीय उत्तराधिकारी विविधता, अनुभववाद, न्यायसंगणना, विभिन्न नागरिक वाणिज्य, तेल्याच्या रंग व धृष्टी गायी उद्देश्यासाठी बाहिरिवासी आरोग्यसेवकांना संस्थेच्या ज्ञानाशील व विद्यापूर्ण कार्यक्रम वेळ आहेत व लवण देखील महाराष्ट्रीय विविध क्रमांक, अनुभवाची संस्थेच्या वेळ आहेत येथे आहेत.

या योजनेच्या निवड केलेल्या गायी महाराष्ट्रीय व पशुपालकांना देखील सेवा व योजनांतर्गत करणे असल्याचे आहेत अथवा महाराष्ट्रीय उद्देश्याचे आहेत गायी नौसी नौसी महाराष्ट्रीय वाणिज्य, तेल्याच्या रंग व धृष्टी गायी उद्देश्यासाठी बाहिरिवासी आरोग्यसेवकांना संस्थेच्या ज्ञानाशील व विद्यापूर्ण कार्यक्रम वेळ आहेत येथे आहेत.

या योजनेच्या निवड केलेल्या गायी महाराष्ट्रीय व पशुपालकांना देखील सेवा व योजनांतर्गत करणे असल्याचे आहेत अथवा महाराष्ट्रीय उद्देश्याचे आहेत गायी नौसी नौसी महाराष्ट्रीय वाणिज्य, तेल्याच्या रंग व धृष्टी गायी उद्देश्यासाठी बाहिरिवासी आरोग्यसेवकांना संस्थेच्या ज्ञानाशील व विद्यापूर्ण कार्यक्रम वेळ आहेत येथे आहेत.

राज्यात दूर व्यवस्था 1:

राज्यात दूर व्यवस्था मंडळ, आद्य (पुस्तक) यांच्या पत्र. एस.पी.एम.वन/प्रथी.प्र.1/पार्श्वी.एस.पी.ए.प्र.1975/1977, दिनांक 04.03.2014 अनुसार राज्यात दूर व्यवस्था 1 ही योजना सन 2012-13 ते 2014-15 ते कार्यालयात महाराष्ट्रीय दूरपूर्व जिल्ह्यात बाहिरिवासी आरोग्यसेवकांना मंडळ देण्यासाठी आहे. योजनेचा मुख्य उद्देश्य योजना कार्यालयातील उच्च विभागीय विभागी बंदूक रेतांना जाणे 38 रेत विविध विभागी निर्माण करणे तसेच महाराष्ट्रीय दूरपूर्व जिल्ह्यात बाहिरिवासी आरोग्यसेवक रूपांतरण, व्यवस्था व संचालनातून उच्च विभागीय न बंदूक पेस्टर करणे ही योजना बाहिरिवासी आरोग्यसेवकांना राज्यात दूर व्यवस्था मंडळ, आद्य (पुस्तक) यांच्या पत्र. 48.9.15 ला तत्काळ केलेल्या आहे. त्या पत्राचा सन 2014-15 मध्ये रेत. 15.00 ता तत्काळ प्राप्त आलेला आहे. तसेच योजनेचे कार्य विभागी बंदूक रेतांना जाणे 38 रेत विविध विभागी निर्माण करणे तसेच महाराष्ट्रीय दूरपूर्व जिल्ह्यात बाहिरिवासी आरोग्यसेवक रूपांतरण, व्यवस्था व संचालनातून उच्च विभागीय न बंदूक पेस्टर करणे ही योजना बाहिरिवासी आरोग्यसेवकांना राज्यात दूर व्यवस्था मंडळ, आद्य (पुस्तक) यांच्या पत्र. 48.9.15 ला तत्काळ केलेल्या आहे.
पशुसंवर्धन गाढिली पुस्तिका!

महाराष्ट्राचे भूषण

अ) देशी गोवंश म्हेस वर्ग :

1) पंढरपूरी म्हेस : पय्याळी नाव
कोलहापूरी, धारवाड़ी.

पंढरपूरी म्हेस

शेपट्ट गॉडा बहुतांशी काळा पांगरा दिसून येतो. ऊष्ण व कोरकोंच घरामानात आणि सामान्य व्यवस्थापनात ही जनवरे ६ ते ७ लिटर उन्नत प्रतिदिन देते शकतात. ही जात उच्च प्रजनन शक्तीच्या दुसर्या ओळखाने जाते. एका बॅटला सरासरी १५०० किलो तुप देते व निर्माण सरासरी ५ टके आहे.

2) नागपूरी म्हेस

पय्याळी नाव: बेरारी, पूणेबंधी, हिलेच्यूरी, गव्हारां, बहावणी व गव्हाणी इत्यादी. महाराष्ट्र नागपूरी म्हेस नागपूर, वर्ध, वर्तमाण, कळकटणा, अमरावती, अकोला व अचलपुर या भागात बहुतांशी आढळतात.
नागपूरी मेले

बैशिष्ट्य : रंग सामान्यतः काळा, कचित तोड़कर, पायावर पाड़न्या खुणा, शेपु मांडा काळा व कचित पांढे केस, चेहरा लांब सरडू, तुलनेने लांब व मजबूत गठ, शिंगे लांब, पाडीमागे बच्चा दिसेले वडपलेले.

300 दिवसाचे सरासरी दृष्ट उत्पादन 10५५ सितर, स्निग्धांश 8.२५ टके, रेडच्याचा वापर शेती कामासाठी केला जातो. व्यवस्थापन खर्च नगण्य असला.
३) मराठवाडी म्हैस : पर्यायी नांव दुधानयाडी

मराठवाडी म्हैस ही प्रामुख्याने परम्परा, हिंगोली, नंदेड, जालना, बौद व लातूर ह्या जिल्ह्यात आढळते. ही जात काठक असून कोणताही खुराक न देता केवळ चराईवर तीन ते पाच विंटा दुध दरोज देऊ शकते. आढ़ महिन्यांच्या कालावधीत ही जात साधारणपणे ८५० ते १०५० लिटर दुध देऊ शकते. ही जात काठक, मध्यम बांधवाची असून लहान शेतकांनी साधारणपणे दूधानं फायदेशीर आहे.

४) देशी गोवंश गाय वर्ग :

१) डांगी:

गुजरात मध्ये डांग टेकड्डद्वयकन डांगी हे नाव पडले. या भागात पाल्याच्या खुराक असतील तरी टेकड्डपूर्वे जमीन नापम्क आहे. या जातीची जनावरे डांगी जाती सारखी दिसत असती तरी गंगे, तालकंधबांदी, साहीवाल या जातीची भोजनी असून त्यांची काठक असताने भरपूर पालासमानात आते. काही जाते महणून ऑडळून आलेली. डांगी जनावरे जिन्हींला जिल्ह्यात गुजरात काठक भागात खात्मे, डांगसेवक, अकोलें तसेच अहमदनगरून जिल्ह्यातल्या काही भागात आढळतात त्यासाही दराचे, रायगड, रत्नागिरी, सिंधुदूर्ण जिल्ह्यात आढळतात.

बेशीपणे:

रंग पांढरा किंवा काळा पांढरा, परंपरा तर लातूरची असलेली जसे जनावराची खांढामागील उंची ४५ ते ५० इंच तर छातीचा पेक सरशरी ५८ ते ६० इंच असतो. त्यांचा चमकदार असून तेलकटपणाच्या तिथे खास अनुप्रयोगाने स्वरूपत करत. डोके लहान, कपड्यात काहीसे धड्डे आलेले. डोके नाकपुड्ड्यांमध्ये रंद भाग, सिंगे आपडू व जाड असून, कान
लहान आड़मालता. बर्शिंड मध्यम व मजबुत, स्कंट व कमरे बनावू, शरीरमान असुन पाट, चार्ही वाय मजबुत व आखुड़, खुर मजबुत, काढ़े व टपणक असतात. पोली काहीशी लोबती, शिमावरील लवचा हिली असली ती लोमबती नसते. ही जनाबंद मध्यम कामाशाली उपयुक्त असुन टेक्करांबर तसेच भात शरीरचा कामी योय आहे. मजबुत असलेली ही जनाबंद कुणातले चराईवर बहुतांशी अवलंबून राहतात. माल-वाहक महुक ही जनाबंद ताली रे ते नौ मैल गटीचे चालू शकतात. गायचे दुध उत्पादनाची कमता अंदरून २६० ते ३०० लिटर असते.

२) देयणी : पय्याची नाव डॉगरपट्टी-

या जातींस २०० वड्यांच्या इतिहासात आहे. डॉगरपट्टी भागातील व मालमालविरत जात महुँन ओळखली जाते. गैर/डांगी व स्वच्छ जनवारांच्या संस्थापत्ता ही जात निर्माण घडावापर तसेच समजले जाते. होक्याक व वारी अंशी सिंगे गाय कोली तर शरीरीच्या देयणी, मजबुतती इत्यादी डांगी जातीली बैशिके म्हणजे बालवास मिळतात. देयणी जातीच्या जनाबंद लांब, समानानाद जिल्हात तसेच कर्नाटक व आंगणप्रदेशाच्या सिमांतावर भागात आढळते.

बैशिके : भरदार शरीरची डोंलदार जनाबंद आकाराने मध्यम गैर साखरी दिसतात. रंग ठिपकेदार काळा ब्लिंक पाहता कपाळ बहीं गोलाकार व भरीच, कान लंब व समोर उघडे असले तरी गैर प्रमाण फांकूकी व टेक्कला खाला नसते. संगीत गैर प्रमाण बाहेर व मागे बललेली असतात. लवचा हिली, मध्यम जादीची, पोली मोठी, शिमावरील लवचा लोबती, लवचवरील केश आखुड व मुलायम, खुर मजबुत, साखरी अकाराची व काळी असतात. जातीस रस्तेवर गुजरत जर जनाबंद शरीरशाली असल्याचे दिसते. गायबाची काळ मोठी व विकसित झालेली असते. देयणी मध्ये बालक्यां, बांसा व शेवरा या प्रकारची जनाबंद आड़मालत येतात. देयणी गायचे दरसेज ३ ते ६ लिटर दुध देक शकतात व तीन दिवसांचा उत्पादन १०० किलो एकडे असंतु चांगला व्यवस्थापनात १८०० किलो पर्यंत दुध व फंट ४.३% असते या जातीच्या नर बालराना जास्त माणून आहे.
3) गवाचालः

या जातीचे वस्तीस्थान उत्तर भारतापासून दक्षिणेष्टत सर्वजन
आहानंत. आहुक्षु शिषी हस्तालेली ही जनावर फिक्ष्या एखादी रंगाची
अमुन, साधुवर; बहिष्कृत चेहर्पिंडीची असत. अंगोल जातीची
व्यथा साध्य हलक्या जातीची असून तुलने
दिशाूूण्यी असतात. माराठांणी ही जनावरी मध्य-पूर्वाता या
गोडवर भागातील डोंगरसाधारणे सैनाूऱ्याचे माल वाहतुकीर्ती योग्य असी.
चित्रदुक्कित कामकरते असलयाचे समजते जाते. गोड सामाजिक
चाहतु जात्यातील महाराष्ट्रातील दुक्कित कृषक मुक्त: सैनाूऱ्याचा उपयोगासाठी
ही जात वापरत जाते. ऐतिहासिक संदर्भानुसार या गायाची
दुहोपातर उत्पत्ती चांगली होती. मात्र मारगित दोन शासक
कामासाठी या जातीचे विकास केला गेला. महाराष्ट्रात सोंप जाणारे
ही मुख्यतः नागपूर, कर्नू, यवत्माच, अमरावती, अकोला व वारिला
जिल्ह्यात आह्वानंत.

बैशिष्ठः

ही जनावरी मध्यम-उंचीची पादीमागे निमुठली होत गेलेली
लांबशीर असत. त्या दिव्य की पाळक, डोंके ज्ञानी शिली
हांबोधे, शिकांजवळ ठूंढ व खाली निमुछले, कपाच साध्यात: सर्वत्र वेदीत बांसू
पाठीमागे गेल्याने बहिष्कृत बांडते. डोंके
बदामासारखे व कोणता बसवलेले असत. काळ मध्य, शिषी
आहुक्षु काळी सारखी असत. या जातीच्या बैलाना शैवी व ओहट
कामासाठी माणणी असते. गायाचे एका दिवसात दुपुर उत्पत्ती 3 ते 6
लिटर असते. या गायाचे २५० दिवसात दुपुर उत्पत्ती ८९५ लिटर
एवढे असून फॉट ४.३% असते.

4) बिखारः

उपम - ही जात मुख्यचा मौसूम राज्यातील हडळीकर या
जातपासून निर्विभाज झाल्याचे दिसते. खिद्धारमुखने पुराणा कल्पना
व बिखारी महणजे पुराणा कल्पना सांगावतां मलाचुढणे. सातपुडा
पिंपरीत या जाती सिलासाठी महणजे संबंधित जाते. महाराष्ट्रात बिखार
जातीचे चार प्रमुख प्रकार आहेत: अटाराडी महात ही जात दक्षिण
महाराष्ट्रात आहेत. सोलापूर व सतारा जिल्ह्यात महाबद्ध बिखार
चित्रों में दिखाया गया कि एक पादला असून नाक व कुंड लालसर असता। एक नीला खिंचाव बहुत असून खांदार दिखाया गया नाक आदबतो। न्यायालय वास्तव में तिन अंतर्गत लाल का स्वतंत्रता लाल असता। नाक दोन महिलाओं है सो जाते। कमांड नाकों और ऊपर अंकुं दिखाये गोलाकार फुंगी जा आदबतो। नाक कुंडासन वा कमांड बंधौन वस्तित पद गली दिसून बदले, तोहं निमूले निमूले बांध व पट्टा लाँच असलेने असून नाक तीर्थ व उठाव असते। नाक असूनकांपील भागी एक रंग असतो। मात्र गुलारी रंग असून शेतक्षेत्र एक विशेष पद सता। डेंडो उपर व बढ़ाके लहान असते ती उठाव असता। डेंडो भोजन हला त्वचा जाड चूमीदार व काठमाड असलेने मलूम भासता। कान लहान टोकरा व बिनूला असता। शिक्षा गूढ़ असून इंद्रधनुष गोलाकार रंग कार्यालय पाठ्यपुस्तकों बन्या दिनें चूलेने वर्तमान निमूली असता। काठमाड रंग कार्यालय शिक्षा विशेष पदस्ती असते। पूर्ण ही जात अंतर्यंत्रिक अल्पकालीन, आकार रेखाय गरीबरहिली, चलाव व शेती कामान अलंकार सकारात्मक आहे। खिंचाव गवीने दरारला दुध उपयोग २ ते ३ लिटर असून फॅक्ट ५०.२२% असते.
9) लालकंधारी:

या जातीची जनावे महाराष्ट्रातील नांदेड, लाहुर, परभणी, हिंगोली तसेच कर्नाटकातील बिरद जिल्ह्यात व आंग्लाप्रवेशातील कृष्णा भागात आढळतात. ही जात हलकते जाणारा, बुलबाणा व लघुस्वायत जिल्ह्यात बायल आहेत. तसेच कंधार, तातुस्वायत मोठ्या प्रमाणात आढळते. ती रंग लाल असताने या जातीस लालकंधारी असे संबोधलेले जाते.

वैशिष्ट्ये: शेती कामासाठी उपयुक्त असलेली ही जात लाल रंगाची रंग असा तपासलेला व देखती असते. तसेच कान लंब व डोंगे चमकदार असतात. दुध उत्पादन २८० दिवसात ६०० किलो दुध मिळते.

<table>
<thead>
<tr>
<th>मोजमाप</th>
<th>मेल</th>
<th>फिमेल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>लांबी</td>
<td>९९८ सेमी</td>
<td>९९५ सेमी</td>
</tr>
<tr>
<td>उंची</td>
<td>१२६ सेमी</td>
<td>१२५ सेमी</td>
</tr>
<tr>
<td>छातीचा पेघ</td>
<td>१६९ सेमी</td>
<td>१५२ सेमी</td>
</tr>
</tbody>
</table>